पाठ 3

बरसते जल के रूप अनेक

लेखक – शिवशंकर

पाठ-परिचय

इस पाठ में जल के अनेक रूपों के विषय में बताया गया है। धरती पर तालाब, झील, नदी, समुद्र आदि जल-स्रोतों का पानी वाष्प बनकर वायुमंडल में मिल जाता है और नमी के रूप में मौजूद रहता है। यही पानी ठंडा होकर कभी पाले के रूप में वापस आता है तो कभी बर्फ़ के रूप में और अधिक ठंडा होने पर ओलों के रूप में। इस प्रक्रिया को इस पाठ में बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सुहावने मौसम में राघव,परमीत, ज़फ़र और अमन मैदान में खेल रहे थे |अमन के दादाजी दूर से बच्चों को खेलते हुए देख रहे थे | वे बहुत प्रसन्न थे कि सभी बच्चे आपस में मिल-जुलकर खेल रहे हैं | गेंद से खेलने का सिलसिला अभी शुरू ही हुआ था कि अचानक बिजली चमकने लगी |कुछ ही देर में बादल भी गरजने लगे |दादाजी ने हाथ हिलाते हुए बच्चों को वापस आने का संकेत दिया |

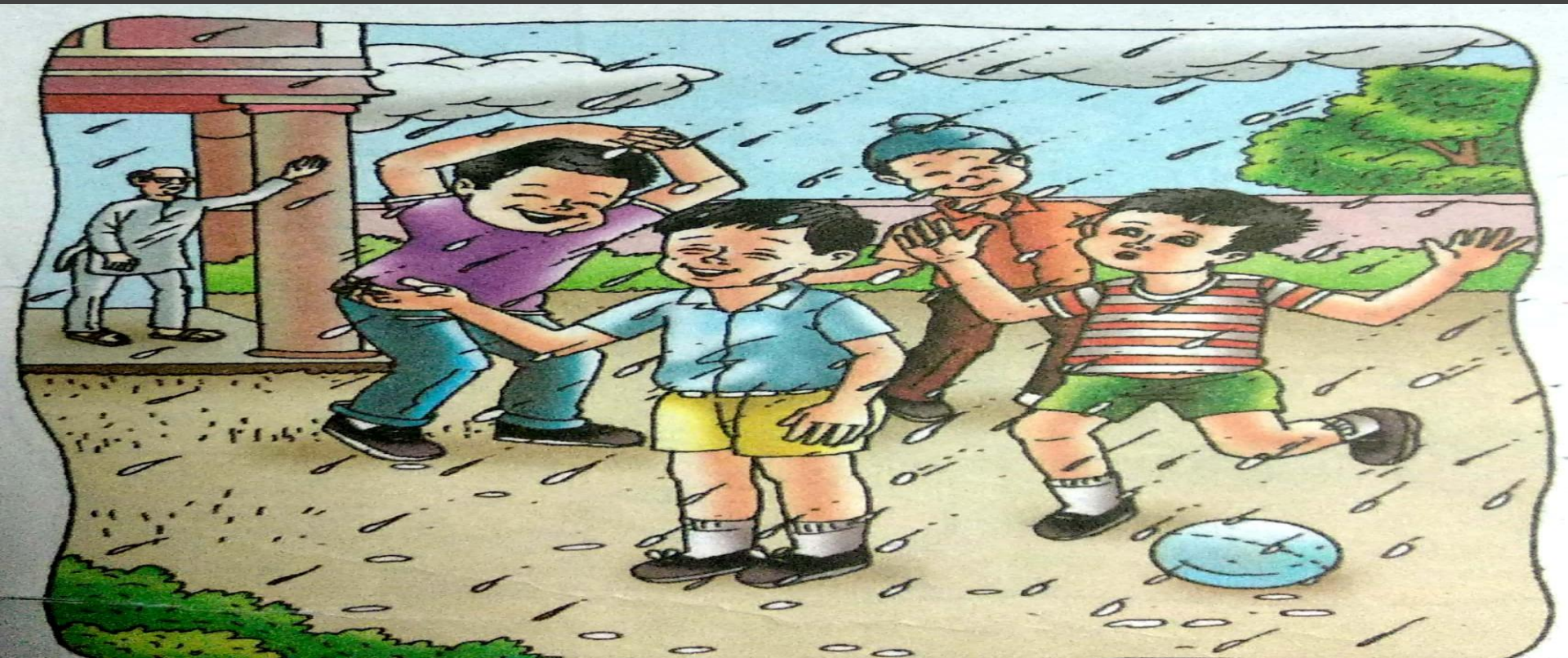

बारिश शुरू हो गई थी | दादाजी ज़ोर से बोले,"बच्चों! चलो| ओले पड़ रहे हैं |" अमन, राघव, परमीत और ज़फ़र सिर पर हाथ रखे अमन के घर की ओर दौड़ पड़े | दादाजी ने चश्मा उतरा और वे बाहर बरामदे में ही अपनी आराम कुर्सी पर बैठ गए |दादाजी बोले, "बच्चों! आज बहुत दिन बाद ओले पड़े हैं | अच्छा हुआ,तुम सब चले आए, नहीं तो सिर पर टपाटप होती |" देखते-ही-देखते बरामदे के आगे का खुला स्थान ओलों से भर गया | राघव ने दादाजी से पूछा, "दादाजी, ये ओले क्या होते हैं ?" दादाजी मुसकुराए और बोले, "बच्चों! वायुमंडल में विद्यमान जल की बूँदें झटके से उछलकर ऊपर चली जाती है | ऊपर की हवा बहुत ठंडी होती है | ये बूँदें वहीं जमकर ओले का रूप धारण कर लेती हैं |

दादाजी ने बच्चों से पूछा, “क्या तुमने ‘पाला’ पड़ता देखा है ?” “पाला!” सभी बच्चे एक साथ बोले | दादाजी ने कहा, “जब ठंड अधिक पड़ने लगती है तब हवा में मौजूद भाप जम जाती है और बर्फ़ की चादर के रूप में दिखाई पड़ती है | यही ‘पाला’ है |” “वाह! दादाजी, यह भी जल का ही एक रुप है |” दादाजी ने समझाया कि जल जीवन तो है ही इसके रूप भी अनेक हैं | इतने में अमन दादाजी के लिए चाय ले आया और दोस्तों के लिए गरमा-गरम पकौड़े |

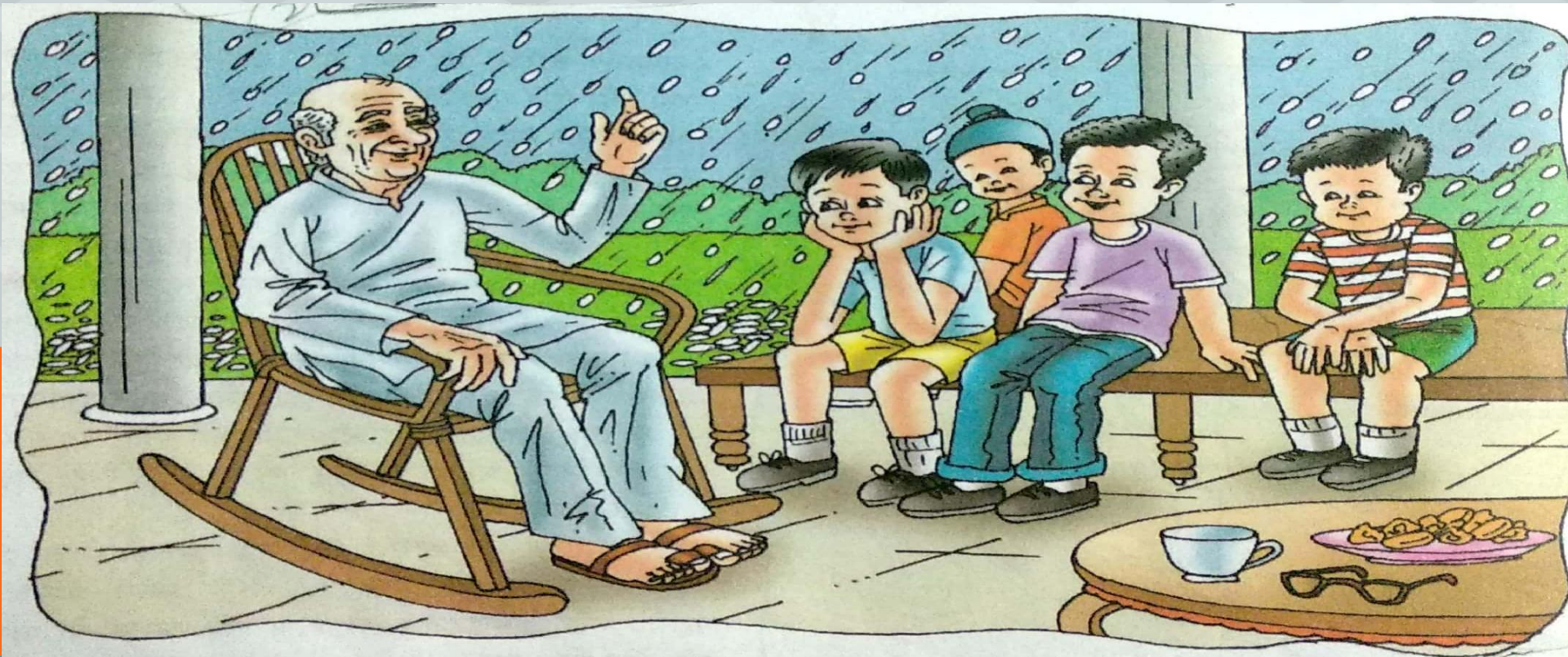

परमीत ने कहा,”दादाजी, पहाड़ों पर जो बर्फ़ गिरती है उसके बारे में कुछ बताइए |” दादाजी यह सुनकर मुसकुराए | उन्होंने कहा, “परमीत! पहाड़ ऊँचाई पर होते हैं न, सो वहाँ ठंड भी अधिक पड़ती है |शीत ऋतु में अधिक ठंड के कारण वायुमंडल में मौजूद भाप बर्फ़ के रूप में बदल जाती है | यही बर्फ़ जब पहाड़ों पर बरसती है तो इसे ‘हिमपात’ कहते हैं|” अब ओले पड़ना बंद हो गया था | हल्की फुहारें-सी पड़ रही थीं | बच्चे ऐसे सुहावने मौसम में मज़े से पकौड़े खा रहे थे और बूंदों की ताल के संग उनका मन-मयूर नाच रहा था|

➢ यह कार्य अपनी उत्तरपुस्तिका में करें | (आरेख)

पाठ का वीडियो देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें |

https://www.youtube.com/watch?v=6oBAKY4d31g

धन्यवाद